1 To 6

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय

विश्वविद्यालय हरित-नीति

डॉ० राजेश मिश्रा

राजेश मिश्रा

पृष्ठ-1 से 6 तक

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय :

विश्वविद्यालय हरित-नीति

परिचय-

वैश्विक पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन, पारिस्थितिकी तंत्र के कामकाज को प्रभावित करते हैं, जो बदले में जैव विविधता के नुकसान, जल-विज्ञान प्रणालियों में परिवर्तन, मीठे पानी की आपूर्ति में व्यवधान, भूमि क्षरण, शहरीकरण की घुसपैठ और खाद्य-उत्पादक प्रणालियों पर जोर देने के लिए जिम्मेदार हैं। हरित-नीति प्राकृतिक संसाधनों की स्थिरता और प्रभावी प्रबंधन की प्रतिबद्धता की घोषणा है जिसके लिए कोई भी संस्थान आगे आ सकता है और हरित तथा स्वच्छ पर्यावरण के प्रति प्रतिबद्धता की घोषणा कर सकता है। हरिताभिमुख होने का एक विशेष आर्थिक लाभ यह है कि इसमें लागत कम है और पैसा भी बचता है| जैसे प्रकृति की अक्षय ऊर्जा के उपयोग से हमें ऊर्जा की लागत को कम करने में सहायता मिलती है।

एक स्थायी विश्वविद्यालय अपनी संकल्पनाओ को पूरा करने के लिए क्षेत्रीय या वैश्विक स्तर पर समाज को अपने संसाधनों के उपयोग से जुड़े पर्यावरणीय, आर्थिक, सामाजिक और स्वास्थ्य प्रभावों को शिक्षण, अनुसंधान, साझेदारी, और प्रबंधन के माध्यम से समझाता है, सबको शामिल भी करता है और उसे बढ़ावा देने का कार्य भी करता है | जो समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने में सहायक होता है। विश्वविद्यालय 'हरित नीति' को जैव-विविधता, स्वच्छ पर्यावरण को बढ़ावा देने और ऊर्जा के कुशल उपयोग के माध्यम से कार्बन क्रेडिट को कम करने के लिए, विभिन्न दृष्टिकोणों का उपयोग करके संस्थान को स्थाई बदलाव के लिए तैयार करता है ताकि विद्यार्थियों को एक अनुकूल शैक्षणिक माहौल प्रदान किया जा सके।

हरित-नीति के अंतर्गत जैव-विविधता का संवर्धन,संरक्षण, स्वच्छ पर्यावरण का निर्माण और परिसर में ऊर्जा उपयोग की प्रक्रिया में कार्बन क्रेडिट को कम करने का प्रयास शामिल है।

हरित-नीति के उद्देश्य :-

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर में एक स्वच्छ, हरा, प्लास्टिक मुक्त और कम कार्बन युक्त टिकाऊ परिसर विकसित करने और उसे बनाए रखने में अपना पद-चिह्न बनाना| अपने प्रयासों के लिए विश्वविद्यालय निम्नलिखित ढंग से संकल्पबद्ध है।

- विश्वविद्यालय की पर्यावरणीय स्थिरता के व्यापक सकारात्मक प्रभाव को अधिक से अधिक रखने के लिए |
- संचार,सहयोग और साझेदारी के माध्यम से इसे स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचाना |
- एक ऐसी संस्कृति का निर्माण करना जहां विश्वविद्यालय समुदाय हरित और स्वच्छ परिसर के लिए अपने व्यक्तिगत और सामूहिक प्रयासों को बेहतर बनाने में संलग्न हो, सशक्त हो और समर्थित भी हो |
- बिजली की खपत कम रखने में दक्ष और कम लागत के उपकरणों के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए|
- जैव विविधता के संरक्षण, कार्बन का कम उत्सर्जन और हरित वातावरण निर्माण के लिए विचलन तंत्र स्थापित करना |

नीति के क्षेत्र :

- ## जैव विविधता :-
- **जैव विविधता संरक्षण और पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन**
- नकारात्मक प्रभावों को कम करने और जहां संभव हो, जैव विविधता और प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष लाभों को बढ़ाने के प्रयासों का अगुआ बनने के लिए विश्वविद्यालय कदम बढ़ा रहा है |
- परिसर में 50 प्रतिशत से अधिक हरियाली है जो विभिन्न प्रकार के वनस्पति और जीवों के लिए एक शरणस्थली भी है |
- विश्वविद्यालय छात्र/कर्मचारियों द्वारा परिसर की जैव विविधता की नियमित निगरानी कर रहा है|
- नए भवनों का निर्माण करते समय यह ध्यान में रखा जाता है कि फॉना और फ्लोरा के आवास पर मानवजनित हानि और दबाव कम से कम पड़े |
- विभिन्न पर्यावरण दिवसों, विशेष अवसरों पर वृक्षारोपण कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जाता है जहां छात्रों और कर्मचारियों को पौध-रोपण में भागीदारी के लिए प्रोत्साहित किया जाता है |

- परिसर के औषधीय पौधे, वनस्पतियों और जीवों के संरक्षण के लिए उद्यान, विविध वन रोपण क्षेत्रों, सड़क किनारे वृक्षारोपण, बागवानी और उद्यान विकसित करने के लिए प्रोत्साहन दिया जाता है |
- परिसर के जल निकाय, जल संरक्षण के साथ-साथ जीवों के आवास में मदद करते हैं।

❖ फ़ेर्गस मार्क एंथनी से प्राप्त तस्वीर

• जल संरक्षण :

विश्वविद्यालय द्वारा जल संरक्षण के क्षेत्र में निम्नलिखित उपाय किए जा रहे हैं:-

- नवनिर्मित भवनों के छत पर जल संरक्षण प्रणाली (रूफ वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम) तैयार किया जा रहा है।
- सतही अपवाह को कम करने और वर्षा जल की अधिकतम मात्रा को संग्रहित करने के लिए पूरे परिसर में जल संचयन प्रणाली उपलब्ध कराई गई है।
- पानी के नुकसान को कम करने के लिए पत्थर की दीवारें और चेक डैम भी बनाए गए हैं।
- परिसर के भीतर गहराई, पत्थर की पिचिंग, बांध की ऊंचाई बढ़ाने आदि के माध्यम से उपलब्ध जल निकायों का उचित प्रबंधन।
- उपलब्ध जल निकायों से पानी के ओवरफ्लो को बचाने के लिए कुछ स्थानों पर चेकडैम बनाए गए हैं |

• कागज रहित कार्य:

- विश्वविद्यालय ने भारत सरकार के GeM पोर्टल का उपयोग करके ई-निविदा के माध्यम से वस्तुओं और सेवाओं की खरीद को अपनाया है, और फ़ाइल/कागजी कार्य को कम करने के लिए एकीकृत विश्वविद्यालय प्रबंधन प्रणाली (IUMS), वित्तीय प्रबंधन के लिए PFMS के माध्यम से कागजी कार्यों को कम किया जा रहा है।
- विश्वविद्यालय शैक्षणिक तथा गैर-शैक्षणिक दोनों विभागों को विभिन्न रूपों में सभी सहायक सेवाएं प्रदान कर रहा है ताकि कागज रहित कार्य सुनिश्चित किया जा सके।

- एक स्थाई पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करने के लिए संसाधन आपूर्तिकर्ताओं के साथ सहयोग को बढ़ावा देना |

• स्वच्छ वातावरण

- **वातावरण की स्वच्छता को बढ़ावा देते हुए निम्नलिखित बिन्दुओं का ध्यान रखा जायेगा-**

• कुशल ऊर्जा उपभोग प्रक्रिया :-

अनुसंधान गतिविधि, छात्र और कर्मचारियों की संख्या में बढ़ोत्तरी, के लिए विश्वविद्यालय की योजनाओं का समर्थन करते हुए पारंपरिक ऊर्जा की खपत को कम करना। विश्वविद्यालय ऊर्जा संरक्षण के निम्नलिखित उपायों को लागू कर रहा है :-

- प्रशासनिक, शिक्षण और आवासीय भवनों में पारंपरिक बल्बों को एलईडी से बदलने को बढ़ावा देना।
- जहां छात्र, शिक्षक और कर्मचारी सदस्य हों वहां उपयोग के बाद बिजली के उपकरणों को बंद करने और उपयोग में न होने पर स्विच ऑफ करने की आदत को बढ़ावा देना |
- नवनिर्मित भवनों में अनिवार्य रूप से सोलर सिस्टम लगाना ।
- पारंपरिक ऊर्जा पर निर्भरता को कम करने के लिए परिसर में सौर ऊर्जा संयंत्र की स्थापना को बढ़ावा देना।

• कचरे का प्रबंधन

- पूरे विश्वविद्यालय में 3-R (कमी, पुन: उपयोग और पुनर्चक्रण) अवधारणा को बढ़ावा देना।

- परिसर में ठोस और तरल कचरे के सुरक्षित निपटान के लिए अपशिष्ट प्रबंधन संयंत्र की स्थापना ।

- बायोडिग्रेडेबल कचरे के निपटान के लिए वर्मी कम्पोस्टिंग को बढ़ावा देना।

- विभिन्न इलेक्ट्रॉनिक घटकों की बायबैक नीति के माध्यम से ई-कचरे का निपटान जारी रखना।

• साझेदारी, जुड़ाव, जागरूकता और प्रशिक्षण

कर्मचारियों और छात्रों को अपने अर्जित ज्ञान, कौशल और अनुभवों को साझा करने, उसे और अधिक विकसित करने तथा उन्हें समर्थ बनाने में विश्वविद्यालय की पर्यावरणीय संतुलन की आकांक्षाओं के साथ प्रभावी ढंग से जुड़ने और योगदान करने के लिए, निम्नलिखित कदम उठाए जा रहे हैं:-

- शिक्षा मंत्रालय और यूजीसी द्वारा प्रायोजित विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से छात्रों और कर्मचारियों को पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास के बारे में जागरूक करना ।
- स्नातक के छात्रों को जागरूक करने और प्रशिक्षण देने के लिए पर्यावरण शिक्षा एक पाठ्यक्रम के रूप में है |
- पर्यावरण प्रबंधन और ऊर्जा दक्षता के प्रति छात्रों को सशक्त बनाने और शिक्षित करने के लिए नियमित प्रशिक्षण और कार्यशालाओं का आयोजन किया जा रहा है।
- क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय हितधारकों के साथ औपचारिक तथा अनौपचारिक सहयोग और भागीदारी को प्रोत्साहित किया जाता है।
- विश्वविद्यालय में आधिकारिक कार्यों में कागज के उपयोग को कम करने के लिए डिजिटलीकरण का चलन है।

- **कार्बन उत्सर्जन में कमी**

- **विश्वविद्यालय संपत्ति का सतत निर्माण और नवीनीकरण :**

पर्यावरणीय स्थिरता बढ़ाने के लिए और निर्माण तथा नवीनीकरण परियोजनाओं के प्रभावों को कम करने के लिए, निम्नलिखित कदम उठाए गए हैं:

- परिसर का कोई भी निर्माण, नवीनीकरण या रखरखाव का कार्य जैव विविधता को विशुद्ध नकारात्मक रूप में प्रभावित नहीं करता जो संभावित शुद्ध सकारात्मक प्रभाव को दर्शाता है।
- विश्वविद्यालय ने तीन भवनों का निर्माण किया है, जैसे वानिकी, वन्यजीव और पर्यावरण विज्ञान विभाग, जैव प्रौद्योगिकी विभाग, वनस्पति विज्ञान विभाग, और ग्रामीण प्रौद्योगिकी तथा सामाजिक विकास विभाग, जो गैर-नवीकरणीय ऊर्जा संसाधन को कम करने के लिए ऊर्जा कुशल हैं। इसके अलावा, छह अन्य ऊर्जा कुशल भवनों का निर्माण, ग्रीन रेटिंग फॉर इंटीग्रेटेड हैबिटेट असेसमेंट (गृह) के दिशा-निर्देशों के अनुसार किया जा रहा है।

- **परिवहन प्रणाली**

विश्वविद्यालय की परिवहन व्यवस्था शिक्षकों, कर्मचारियों और छात्रों को काम के लिए आने-जाने के साथ-साथ अन्तःपरिसर यात्रा के लिए व्यवहार्य, सुलभ और टिकाऊ परिवहन विकल्प प्रदान करने के लिए है जिससे कार्बन का उत्सर्जन कम हो सके ।

- परिसर के भीतर पैदल चलने, साइकिल के उपयोग और ऑटोमोटिव वाहनों के न्यूनतम उपयोग जैसे उपायों के माध्यम से कार्बन उत्सर्जन में कमी को बढ़ावा देना।
- परिसर में बैटरी चालित वाहनों का प्रचार-प्रसार।
- कार्यालयों और आवासीय क्षेत्रों में कचरे के कम उत्पादन को बढ़ावा देना और इसके लिए उन्हें प्रेरित करना।